ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

अक्टूबर 2018 (द्वितीय)

वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

सृष्टि संवत् *1,96,08,53,119*
विक्रम संवत् *2075*
दयानन्दाब्द *195*

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 18

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अक्तूबर, 2018 (द्वितीय)
16 से 30 अक्तूबर, 2018 तक

इस अंक में....

1. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 2
2. पितृयान-देवयान 4
3. समलैंगिकता बनाम सामाजिक नैतिकता 6
4. चारों ओर मधुवर्षा 7
5. प्रेरक वचन 8
6. पाँच कारणों का प्रभाव विशेष होता है मनुष्य के ऊपर 9
7. नींबू एक गुण अनेक 10
8. अमूल्य शिक्षा 11
9. स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द 12
10. रामपालदास गया सतलोक 13
11. तनाव का उपचार 14
12. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

8. भ्रान्त होकर मन्दिर-मन्दिर देश-देशान्तर में घूमते-घूमते दु:ख पाते, धर्म, संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते, ठगों से ठगाते रहते हैं।

9. दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्रीगमन, मद्य-मांसाहार, लड़ाई-बखेड़ों में व्यय करते हैं, जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दु:ख होता है।

10. माता-पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं।

11. उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता है और चोर ले जाता है तब हा-हा करके रोते रहते हैं।

12. पुजारी परस्त्रियों के संग और पुजारिन परपुरुषों के संग से प्राय: दूषित होकर स्त्री-पुरुष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं।

13. स्वामी-सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्ध भाव होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

14. जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़बुद्धि हो जाता है, क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्त:करण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है।

15. परमेश्वर ने सुगन्धियुक्त पुष्पादि पदार्थ वायु, जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिए बनाए हैं, उनको पुजारी जी तोड़-तोड़कर, न जाने उन पुष्पों की कितने दिन तक सुगन्धि आकाश में चढ़कर वायु जल की शुद्धि करती, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल-सड़कर उलटा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढ़ाने के लिए पुष्पादि सुगन्धित युक्त पदार्थ रचे हैं?

16. पत्थर पर चढ़ाये हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सबका जल और मृत्तिका के संयोग होने से मोरी वा कुण्ड में आकर सड़कर इतना उससे दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का और सहस्रों जीव उसमें पड़ते हैं, उसी में मरते और सड़ते हैं।

मूर्तिपूजा के करने से ऐसे-ऐसे अनेक दोष आते हैं, इसलिए सर्वथा पाषाणादि मूर्तिपूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है।

प्रश्न 808. जो शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की पूजा को 'पंचायतन पूजा' कहा है, क्या यह गलत है?

उत्तर-पूजा का अर्थ है-'सत्कार करना'। चेतन परमपिता परमात्मा की मूर्ति बनाना चेतन को जड़ बनाने के समान है। पंचायतन पूजा का वास्तविक अर्थ है-'पांच देवताओं का सत्कार करना।' 1. माता, 2. पिता, 3. आचार्य, 4-5. पत्नी के लिए पति और पति के लिए पत्नी। ये पांच मूर्तिमान् देव हैं जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त करने की सीढ़ियां हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्ति पूजते हैं, वे घोर नरक में पड़ते हैं।

प्रश्न 809. माता-पिता आदि की सेवा भी करें और मूर्तिपूजा भी करें तब तो कोई दोष नहीं?

उत्तर-पाषाणादि मूर्तिपूजा तो सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्तिमानों की सेवा करने ही में कल्याण है। बड़े अनर्थ की बात है कि साक्षात् माता आदि प्रत्यक्ष सुखदायक देवों को छोड़ के अदेव पाषाणादि में सिर मारना स्वीकार किया। इसको लोगों ने इसलिए स्वीकार किया कि माता-पितादि के सामने नैवेद्य वा भेंट-पूजा धरेंगे तो वे स्वयं खा लेंगे तो हमारे मुख वा हाथ में कुछ न पड़ेगा।

इससे पाषाणादि की मूर्ति बना, उसके आगे नैवेद्य धर, घण्टानाद टं-टं पूं-पूं, और शंख बजा, कोलाहल कर, उसके आगे से सब पदार्थ ले आप भोगें, वैसी ही लीला इन पुजारियों अर्थात् पूजा नाम सत्कर्म के शत्रुओं की हैं। ये लोग चटक-मटक, चलक-झलक मूर्तियों को बना-ठना, आप ठगों के तुल्य बन-ठन के विचारे निर्बुद्धि अनाथों का माल मार के मौज करते हैं।

प्रश्न 810. जैसे स्त्री आदि की पाषाण मूर्ति देखने से कामोत्पत्ति होती है, वैसे वीतराग शान्ति मूर्ति देखने से वैराग्य और शान्ति की प्राप्ति क्यों नहीं होती?

उत्तर-नहीं हो सकती, क्योंकि मूर्ति के जड़त्व धर्म आत्मा में आने विचार-शक्ति घट जाती है। विवेक के बिना न वैराग्य और वैराग्य के बिना विज्ञान, विज्ञान के बिना शान्ति नहीं होती। और जो कुछ होता है सो उनके संग, उपदेश और उनके इतिहासादि के देखने से होता है, क्योंकि जिसका गुण व दोष न जानके उसकी मूर्तिमात्र देखने से प्रीति न होती। प्रीति होने का कारण गुणज्ञान है। ऐसे मूर्तिपूजा आदि बुरे कारणों से ही आर्यावर्त में निकम्मे पुजारी भिक्षुक आलसी पुरुषार्थरहित करोड़ों मनुष्य हुए हैं। सब संसार में मूढता उन्होंने फैलाई है। झूठ-छल भी बहुत-सा फैला है।

प्रश्न 811. काशी और औरंगजेब बादशाह को लाट भैरव आदि ने बड़े-बड़े चमत्कार दिखाये थे। जब मुसलमान उनको तोड़ने गये और जब उन्होंने उन पर तोप, गोला आदि मारे, तब बड़े भमरे निकलकर सब फौज को व्याकुल कर कैसे भगा दिया?

उत्तर-यह पाषाण का चमत्कार नहीं, किन्तु वहाँ भमरे के छत्ते लग रहे होंगे। भमरों का स्वभाव क्रूर होता है जब कोई उनको छेड़े तो वे काटने का दौड़ते हैं, जब गोले पड़े तो वह छिड़ गये और फौज पर हमला कर दिया।

प्रश्न 812. देखो! महादेव म्लेच्छ के दर्शन न देने के लिए कूप में और वेणीमाधव एक ब्राह्मण के घर में जा छिपे। क्या यह भी चमत्कार नहीं है?

उत्तर-जब मुसलमान मन्दिर और मूर्तियों को तोड़ते-फोड़ते हुए काशी के पास आए तब पुजारियों ने उस पाषाण के लिंग को कूप में डाल दिया और वेणीमाधव को ब्राह्मण के घर में छिपा दिया। जब काशी में कालभैरव के डर के मारे यमदूत नहीं जाते और प्रलय समय में भी काशी का नाश होने नहीं देते, तो म्लेच्छों के दूत क्यों न डराये? और अपने राजा के मन्दिर का क्यों नाश होने दिया? यह सब पोपमाया है।

प्रश्न 813. गया में श्राद्ध करने से पितरों का पाप छूटकर वहाँ के श्राद्ध के पुण्य प्रताप से पितर स्वर्ग में जाते और पितर अपना हाथ निकालकर पिण्ड लेते हैं, क्या यह बात भी झूठी है?

उत्तर-सर्वथा झूठ। जो वहाँ पिण्ड देने का वही प्रभाव है तो जिन पण्डों को पितरों के सुख के लिए लाखों रुपये देते हैं, उनका व्यय गयावाले वेश्यागमनादि पाप में करते हैं, वह पाप क्यों नहीं छूटता? और हाथ निकलता आजकल कहीं नहीं दिखता, बिना पण्डों के हाथों के। यह कभी किसी धूर्त ने पृथ्वी में गुफा खोद उसमें एक मनुष्य बैठा दिया होगा। पश्चात् उसके मुख पर कुश बिछा पिण्ड दिया होगा और उस कपटी ने उठा लिया होगा। किसी आंख के अन्धे गांठ के पूरे को इस प्रकार ठगा हो तो आश्चर्य नहीं। वैसे ही बैजनाथ को रावण लाया था, यह भी मिथ्या बात है।

प्रश्न 814. कलकत्ते की काली और कामाक्षा आदि देवी को लाखों मनुष्य मानते हैं, क्या यह चमत्कार नहीं?

उत्तर-कुछ भी नहीं। वे अन्धे लोग भेड़ के तुल्य एक के पीछे दूसरे चलते हैं। वैसे ही एक मूर्ख के पीछे दूसरे चलकर मूर्ति रूप गड्ढे में फंसकर दु:ख पाते हैं।

प्रश्न 815. पुरी के जगन्नाथ में प्रत्यक्ष चमत्कार है। एक कलेवर बदलने के समय चन्दन का लकड़ा समुद्र में से स्वयमेव आता है, क्या यह झूठ है?

उत्तर-सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने बताया-एक व्यक्ति ने 12 वर्ष तक जगन्नाथ की पूजा की थी, वह वहाँ से विरक्त होकर मथुरा आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा, उन्होंने बतलाया कि यह सब झूठ है। जब कलेवर बदलने का समय आता हैतब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं। वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है, उसको ले सुतार लोग मूर्तियां बनाते हैं। यह उनका चमत्कार नहीं, बल्कि भोले-भाले लोगों को ठगने का षड्यन्त्र है।

प्रश्न 816. जगन्नाथ पुरी में चूल्हे पर ऊपर-ऊपर सात हण्डे धरने से ऊपर-ऊपर के चावल पहले पकते हैं। क्या इसे भी चमत्कार नहीं मानते हैं?

उत्तर-नहीं। जब रसोई बनती है तो कपाट बन्द करके रसोईयों के बिना अन्य किसी को न जाने, न देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छह और बीच में एक चक्राकार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे घी, मिट्टी और राख लगा छह चूल्हों पर चावल पका, उनके तले मांजकर, उस बीच के हण्डे में उसी समय चावल डाल छह चूल्हे के मुख लोहे के तवों से बांधकर, दर्शन करने वालों को, जो धनाढ्य हों, बुला के दिखलाते हैं। ऊपर-ऊपर के हण्डों से चावल निकाल पके हुए चावलों को दिखला, नीचे के हण्डों के कच्चे चावल निकाल दिखाकर उनसे कहते हैं कि कुछ हण्डे के लिए रख दो। इस प्रकार लोगों को मूर्ख बनाकर ठगा जाता है। यह कोई चमत्कार नहीं है। क्रमशः...

पितृयान-देवयान

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

वेद का एक मन्त्र है–

परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां, यस्ते स्व इतरो देवयानात्। चक्षुस्मते शृण्वते ते ब्रीवीमि, मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान॥

इस वेदमंत्र की प्रथम पंक्ति पर हम विचार करेंगे। एक व्यक्ति नौकरी के लिए साक्षात्कार देने के लिए गया तो प्रश्नकर्त्ता ने पूछा कि मनुष्य का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन कौन-सा होता है? वह व्यक्ति बोला, जिस दिन उसका जन्म होता है। यह उत्तर उसका ठीक था और उस व्यक्ति को नौकरी के लिए सिलैक्ट कर लिया गया। अब प्रश्न है कि हमारे जीवन का सौभाग्यशाली दिन कौन-सा होता है? जिस दिन मनुष्य के मन में कुछ प्रश्न उठते हैं कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाना है, प्रभु ने मुझे इस संसार में क्यों भेजा है? वह दिन उसके जीवन का सबसे सौभाग्यशाली दिन होता है, क्योंकि उस दिन उसके जीवन की रेल का कांटा बदल जाता है। वह जीवन के जिस भौतिकवाद के पथ पर चल रहा होता है वहाँ से पटरी बदलकर अध्यात्मवाद के पथ पर अग्रसर होना प्रारम्भ कर देता है।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय॥ वह प्रभु से प्रार्थना करता है कि सत्य की राह पर, प्रभु की राह पर चलूँ, अंधकार से, तम से ज्योति, प्रकाश की ओर चलूँ और मृत्यु से बच जाऊँ और अमृत को पा लूँ, कभी मरूँ नहीं, परन्तु शाश्वत सत्य तो यही है कि जिसने भी जन्म लिया, मृत्यु तो अवश्यम्भावी है। चाहे वह भगवान् राम व भगवान् कृष्ण ही क्यों न हों। हाँ, यह बात अलग है कि मरना कोई नहीं चाहता परन्तु फिर भी सभी मरते हैं।

उपरोक्त वेदमंत्र में मृत्यु से प्रार्थना की गई है कि ऐ मृत्यु तुम कोई दूसरा रास्ता चुनो, तुम मेरे पास मत आना, इसका मतलब यह हुआ कि कोई न कोई दूसरा रास्ता अवश्य है मृत्यु से बचने का। क्योंकि वेद प्रभु की वाणी है और प्रभु की वाणी कभी झूठी नहीं हो सकती। प्राणी बहुत प्रयत्न करता है, अपने को बचाता है मृत्यु से, व्यायाम करता है, अच्छा खानपान रखता है, परन्तु फिर भी बच नहीं पाता। मृत्यु उसे ले जाना चाहती है, लेकिन वह जाना नहीं चाहता। वह मृत्यु को हटा नहीं सकता, मिटा नहीं सकता। एक दूसरा रास्ता है कि मैं स्वेच्छा से उसके साथ चला जाऊँ, उसका वरण कर लूँ। स्वेच्छा से जाऊँगा तो दुःख नहीं होगा। परेशानी यह नहीं है कि मृत्यु क्यों आ रही है, बल्कि परेशानी यह है कि मैं मृत्यु चाहता नहीं, पर वह आ रही है। एक छोटे से उदाहरण से समझिएगा इस बात को–

एक अतिथि है जो असमय हमारे न चाहने पर भी आ गया। मान लो, हमने अपने परिवार के साथ मनाली, मंसूरी, शिमला अथवा बद्रीनाथ, केदारनाथ यानि कहीं जाने का प्रोग्राम बना रखा है। सारी तैयारी पूरी कर ली। सूटकेस बैग तैयार कर लिए, कार की सर्विस करवाकर पेट्रोल डलवा लिया व बच्चों को कह दिया कि सुबह 6 बजे चलेंगे, अब ऐसा हुआ कि रात्रि 10 बजे बैल बजी व देखा कि मामा-मामी या ताया-ताई अथवा हमारा कोई बहुत प्यारा मित्र/सज्जन आ गया। अब हम यात्रा पर नहीं जा सकते। बताइये हमें अब उनसे कितनी परेशानी हो रही है, जबकि वह पहले भी कई बार हमारे पास आ चुके हैं और हम कभी परेशान नहीं हुए। परेशानी उनके आने से हुई या हमारी इच्छानुसार न आने से हुई। हमारी इच्छानुसार न आने से हुई।

इसलिए मन्त्र में कहा है–'**यस्ते स्व इतरो देवयानात्।**' यहाँ मृत्यु को सम्बोधित किया गया कि हे मृत्यु! तेरा देवयान वाले रास्ते पर जाने से तेरा महत्त्व नहीं रहेगा। अर्थात् मृत्यु आई और हम दुःखी नहीं हुए तो उसकी कोई कीमत ही नहीं, कोई महत्त्व ही नहीं, जबकि मृत्यु का काम तो दुःख देना है और हम स्वेच्छा से उसका वरण कर रहे हैं। लेकिन ऐसा कौन कर सकता है। जो जीवन मुक्त है, जो देवयान का मार्गी, राही है। जो देवयान पर चढ़ने का पात्र बन चुका है। ऐसा व्यक्ति मृत्यु से कहता है कि देवयान से, जो भिन्न रास्ता है, तुम वहाँ पर जाओ, वहाँ जाकर दुःख दो, ताकि तुम्हारा महत्त्व बना रहे।

एक देवयान है और दूसरा पितृयान। जो व्यक्ति संसार से जाने के पश्चात् लौटने की इच्छा नहीं रखता, वह देवयान का राही है। यह देवों का रास्ता है। दूसरा है पितृयान अर्थात् पितरों का रास्ता। जिन व्यक्तियों की मानसिक

स्थिति संसारी होती है, वे पितृयान के मार्गी होते हैं। वे लोग जन्म-मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं।

प्रश्नोपनिषद् में एक प्रसंग आता है कि प्रजा कहाँ से पैदा हुई। उत्तर मिलता है कि रयि और प्राण से। ये दो भाग हो गए, एक मिथुन बन गया, मिथुन कहते हैं जोड़े को जैसे सूर्य और चन्द्र। एक सोम है तो दूसरा अग्नि। ये शक्ति के प्रतीक हैं। यह जो संसार है, अग्नि सोम है अर्थात् इनका मिश्रण है। इसी प्रकार संसार में उत्तरायण व दक्षिणायन है, ये संवत्सर के दो भाग हैं। संवत्सर कहते हैं समय को। फिर आते हैं शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष और फिर आते हैं दिन-रात। इसी आधार पर हैं देवयान व पितृयान। देवयान अर्थात् देवताओं का रास्ता जो लौटकर नहीं आता। पितृयान अर्थात् पितरों का रास्ता अर्थात् पितर बनकर रहते हैं, जो लोग वह पुनः-पुनः संसार में लौटकर आते हैं, यानि जन्म लेते हैं, मृत्यु को प्राप्त होते हैं, फिर जन्म व मृत्यु, फिर जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। सबसे बड़ी बात है कि वह अभिनिवेश के क्लेश से अर्थात् मृत्यु के भय से नहीं छूट पाते।

एक बहुत ही रोचक तथ्य है कि हम जिन्हें सुख का उपाय मानते हैं, अच्छा समझते हैं, तुलना करने पर उन्हें हीन अथवा निम्न कोटि का पाते हैं और कई बार ऐसे सुख के उपाय को छोड़ भी देते हैं जैसे-यज्ञ-सत्संग-सेवा-स्वाध्याय-दान आदि। उपनिषद् में एक प्रसंग है कि **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** अर्थात् यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है और इसी उपनिषद् में यज्ञ को प्लवा अर्थात् ढीली नाव कहा गया है। जिस नाव के फट्टे ढीली रस्सियों से बंधे हुए हों, क्या वह समुद्र पार करा देगी, नहीं, वह तो डुबो देगी आपको। लेकिन यज्ञ को प्लवा कह दिया उपनिषद् के ऋषि ने। क्यों कहा ऐसा, इसका भी उत्तर दिया कि इन कर्मों से सुख तो मिल जाएगा परन्तु जन्म-मरण के चक्र से छूट न पाओगे। यज्ञ तो इष्टापूर्त अर्थात् व्यक्तिगत, सामाजिक, सांसारिक, आत्मिक उन्नति को प्राप्त कराने वाला है। इस जन्म-मरण के चक्र से छूटने के लिए तो पितृयान का मार्गी बनना होगा।

दूर यात्रा के लिए तो अधिक श्रेष्ठ साधन चाहिए। मान लो आपने 100 किलोमीटर की यात्रा करनी है। आप जैसे भी आपकी कार खड़ी है आप चल पड़ोगे कार लेकर। यदि आपने 1,000 किलोमीटर यात्रा करनी है तो पहले कार को पूरी तरह चैक करवाओगे, सर्विस कराओगे, अपनी तैय्यारी करोगे। यदि आप ने 10,000 किलोमीटर यात्रा करनी है तो कई मास पहले तैय्यारी करोगे, पासपोर्ट, बीजा बनवाओगे, अच्छी फ्लाईट की टिकट लोगे, तभी तो पहुँच पाओगे। इसी प्रकार यदि पितृयान का मार्गी अर्थात् लम्बी यात्रा पर जाना है तो तैय्यारी भी बढ़िया, सर्वोत्तम क़ोटि की करनी होगी। वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था: यानि कि वेदान्त, विज्ञान, तत्त्वज्ञान को जानना व मानना अर्थात् जीवन में लाना होगा, जीवन में संन्यास भाव, त्याग भाव लाना होगा, सत्त्व शुद्ध करना होगा और इन सबका प्रादुर्भाव होगा अभ्यास से।

एक कथानक है कि एक बार बारह वर्ष का अकाल पड़ गया। फसलें सूख गईं, धीरे-धीरे भुखमरी फैल गई, लोग तड़पने लगे, पशु-पक्षी यहाँ तक कि मनुष्य भी मरने लगे, उसी देश में एक किसान था। उसने सोचा छः वर्ष बीत गये केवल छः वर्ष शेष रह गये हैं, ऐसा न हो कि मैं खेती करना ही भूल जाऊँ या मुझे परिश्रम करने की आदत ही न रहे अथवा मेरे बैल भी काम करना छोड़ दें, इसलिए चलो खेत में हल चलाते हैं। वह अपने खेत में हल चलाने लगा। कुछ लोगों ने उसका मजाक भी उड़ाया कि अभी तो अकाल पड़ा हुआ है और यह हल चला रहा है। उधर से शिव-पार्वती आकाश मार्ग से जा रहे थे। उन्होंने देखा कि मैंने तो बारह वर्ष का अकाल घोषित किया था। यह किसान हल क्यों चला रहा है, वे उस किसान के पास गये और कहा कि अभी से हल क्यों चला रहे हो, अभी तो अकाल के छः वर्ष शेष रहते हैं। वह किसान बोला, मैं अभ्यास कर रहा हूँ ताकि मैं व मेरे बैल अपना काम ही न भूल जाएँ। तब शिव जी ने पार्वती जी को कहा कि मैं भी अपना शंख बजाकर देख लूँ कहीं मैं शंख बजाना ही न भूल जाऊँ। शिव जी ने शंख बजाया तो बादल उमड़-घुमड़कर आए और झमाझम वर्षा होने लगी और अकाल समाप्त हो गया।

हम भी तत्त्वज्ञान पाने का, योगसाधना का अभ्यास लगातार करते रहें तो हमारे जीवन का अकाल अर्थात् जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो सकता है। हम पितृयान के मार्गी न बनकर देवयान के मार्गी बन सकते हैं व प्रभु की कृपा से मृत्यु के बंधन से सदा के लिए छूट सकते हैं।

ओ३म् के ही ध्यान से और ध्यान से ही योग तक,
जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक, यह ओ३म् ही पहुँचायेगा।

समलैंगिकता बनाम सामाजिक नैतिकता

❑ इन्द्रसिंह, एच.सी.एस. (से.नि.) एवं पूर्व न्यायाधीश, संरक्षक, आर्यसमाज घण्टाघर, भिवानी

दिनांक 07.09.2018 को समाचार-पत्रों में समलैंगिकता के विषय में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पढ़कर भारत की पूरी जनता स्तब्ध रह गई और अधिकतर की जुबान पर हैरानी भरी यही चर्चा है कि भारतीय समाज में सहमति से अनैतिक कर्म करने को अपराध की श्रेणी से बाहर कैसे निकाल दिया गया। हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जब से सृष्टि की रचना होकर मानवी जीवन की व्यवस्था बनी है तब से लेकर वर्तमान काल तक इस भारत भूमि पर चोरी और जारी को सभी अन्य बुराइयों से अपेक्षाकृत सबसे बुरा माना जाता रहा है। यह हमारा इतिहास तथा सभी प्रकार के प्राचीन एवं अर्वाचीन धार्मिक तथा सामाजिक ग्रन्थ बताते चले आ रहे कि व्यभिचार से बढ़कर गन्दा काम अन्य कोई नहीं हो सकता। इसलिए व्यभिचार का सर्वाधिक घृणात्मक दृष्टि से देखा जाता रहा है। समलैंगिकता की बात तो दूर, दूसरे की पत्नी, माता, बहन व बेटी की ओर आंख उठाकर दुकृष्टि से देखना भी बड़ा पाप समझा जाता है। इसी तरह दूसरे पति आदि की ओर कुविचार मन में आना स्त्री के लिए भी महापाप कहा गया है। इसलिए आदिकाल से अब तक उक्त आचरण का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था रही है। बल्कि सन्तानोत्पत्ति न करना हो और व्यर्थ में पति-पत्नी सहमति से भी समागम करते हों तो भी शास्त्रानुसार यह व्यभिचार की श्रेणी में आता है।

हमारे देश भारत ने लगभग एक हजार वर्षों से भी अधिक समय तक विदेशियों की गुलामी भोगी है, परन्तु इसके बावजूद विदेशी शासकों ने भी हमारी सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक नैतिक मूल्यों का पूरा ख्याल रखा। अंग्रेजों ने भी इसलिए भारतीय दण्ड संहिता (आई.पी.सी.) की धारा 376 तथा 377 जैसी अनेक धाराओं का निर्माण किया, क्योंकि वे भलीभांति जान गये थे कि परस्त्रीगामी होना, परपुरुषगामी होना तथा समलैंगिकता आदि सभी प्रकार के व्यभिचार इस देश की संस्कृति एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होने के कारण अपराध हैं। बल्कि यहाँ तक है कि अश्लीलता भरी भावना से अन्य व्यक्ति को छूना या स्पर्श करना भी अपराध माना जाता है। स्पर्श करने की बात तो अलग अश्लीलता पूर्ण संकेत दूर से करना भी अपराध है। पूरे संसार के बड़े-बड़े विद्वान् इस बात पर एकमत हैं कि 'वेद' संसार की लाइब्रेरी का पहला पुस्तक है और वैदिक धर्म से पहले पूरी पृथ्वी पर कोई अन्य मत-मतान्तर नहीं था। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण इसके नियमों का पालन करना हमारा मौलिक धर्म है। वर्तमान में जितने भी अन्य मत-पन्थ इस पृथ्वी पर हैं, वे सबके सब 'वेद' रूपी वृक्ष की विभिन्न प्रकार् की शाखाएं हैं। इसी कारण सभी मत-पन्थों का कोई भी धार्मिक ग्रन्थ समलैंगिकता को उचित नहीं ठहराता, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से अप्राकृतिक होने के कारण अनैतिक है। बल्कि अमेरिका और यूरोप को छोड़कर लगभग 72 देश तथाकथित समलैंगिकता के घोर विरोधी हैं। वहाँ पर, यज जघन्य अपराध के कारण, इसके लिए कठोर दण्ड का विधान है।

उपरोक्त निर्णय के आने के पश्चात् अभी से शिथिल मानसिकता वाले व्यक्तियों पर इसका कुप्रभाव पड़ने लग गया है। समाचार-पत्रों में एक छोटी-सी खबर आई है कि एक माँ व उसके परिवारजनों को उनके बच्चे ने खुले तौर पर कहा कि अब हमारा आप क्या कर लोगे, क्योंकि सहमति से समलैंगिकता अब कोई अपराध नहीं रहा है। इस निर्णय के भयंकर दुष्परिणाम तो भविष्य में आयेंगे, जैसे संक्रामक रोगों की उत्पत्ति अर्थात् छूत की बीमारियों का सहजता से आदान-प्रदान होने से असाध्य रोग उत्पन्न होंगे तथा नए-नए प्रकार के विवाद सुनने को मिलेंगे। भौतिक दुष्परिणाम ही नहीं, आध्यात्मिक रूप से भी भारतीय जनमानस के लिए समलैंगिकता निश्चित रूप से अनैतिक कर्म है। लोग मानसिक रूप से पीड़ित रहने लगेंगे। कोई भी कार्य करने के पश्चात् करने वाले की आत्मा बता देगी कि उसने जो कार्य किया है, वह ठीक किया है या गलत किया है। यह संभव ही प्रतीत नहीं होता कि समलैंगिकता का कार्य करने वालों की अन्तरात्मा उक्त कार्य करने के पश्चात् उसे उचित बताएगी। प्रायश्चित्त करने के अतिरिक्त उसके पल्ले कुछ नहीं होगा। वास्तव में चर्चाधीन निर्णय भारतीय समाज के लिए अप्रत्याशित है, क्योंकि वर्ष 2013 में इस विषय से संबंधित प्रत्याशित निर्णय आ चुका था। उक्त स्थिति के दृष्टिगत उक्त निर्णय वेदानुकूल न होने के कारण, आर्यसमाज सहमति से समलैंगिक सम्बन्ध बनाने का पुरजोर विरोध करता है। अत: माननीय सर्वोच्च न्यायालय को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करके यथाशीघ्र पहले वाली स्थिति बनानी चाहिए ताकि भारत की जनता की बेचैनी दूर हो सके और सामाजिक नैतिक मूल्यों का ह्रास रुक सके।

सम्पर्क-*C/o 29* नई अनाजमण्डी, भिवानी *9416057813*

चारों ओर मधुवर्षा

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

व्यक्ति को अपने जीवन का निर्माण करने के लिए दृढ़ता के साथ प्रयास करना चाहिए क्योंकि उसी में व्यक्ति का हित है। वेद में एक मन्त्र आया है-**उत न धियो गो अग्राः पूषन्विष्णवेवयावः। कर्ता नः स्वस्तिमतः** (ऋ.1-90-5) इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे पोषण करने वाले विष्णु ! (धियः गोअग्राः कर्त) आप हमारे कर्मों को वेदवाणी की प्रमुखता वाला करिए अर्थात् हमारा प्रत्येक कार्य वेदानुकूल होना चाहिए वेद के प्रतिकूल नहीं। क्योंकि वेद जिस कार्य को करने की अनुमति दे वही धर्म है और जिस कार्य के करने की वेद अनुमति नहीं देता वह अधर्म है। मनु महाराज ने भी कहा है कि धर्म-अधर्म का निर्णय करने के लिए वेद ही परम प्रमाण है। जो वेदानुकूल कर्मों को अपने जीवन का आधार बना लेता है उस व्यक्ति के जीवन का निर्माण भली प्रकार से हो जाता है। (पूषन्, विष्णो, एवयावः) हे विष्णु ! हमें बल, ज्ञान और क्रिया से संयुक्त करें। परमात्मा में बल, ज्ञान और क्रिया स्वाभाविक रूप से हैं अतः हम भी बल, ज्ञान और क्रिया का अनुपालन करें अर्थात् ये हमें प्राप्त हों व प्राप्त करने का प्रयास करें। हमारा शरीर स्वस्थ व सबल हो, मस्तिष्क ज्ञान से परिपूर्ण हो और हम उस स्वस्थ शरीर तथा परिपक्व मस्तिष्क से अपने जीवन को सदा ही क्रियाशील बनाएं। (उत्) इस प्रकार हमारे कर्मों को आप श्रुतिमूलक करें। वेद में शरीर को सबल बनाने के तथा मस्तिष्क को ज्ञानवान बनाने के अनेक उपाय बताए गए हैं तथा वेद हमें आलस्यादि से मुक्त होकर निरन्तर क्रियाशीलता का ही सन्देश देता है। यदि हम वेदानुसार इस प्रकार से स्वयं को सुसज्जित कर लेंगे तो फिर (स्वस्तिमतः) वह हमारे लिए सब प्रकार से कल्याणकारक बन जाएगा अर्थात् इस प्रकार का वेदानुकूल आचरण ही हमारी चतुर्दिक उन्नति का आधार बन जाएगा।

हमारा जीवन जब इस प्रकार वेदानुकूल हो जाएगा तो फिर वेद कहता है कि **मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधी।।** (ऋ. 1-90-6) (ऋतायते-ऋत्) ऋत् के साथ जुड़ जाने के बाद हमारे समस्त कर्म यज्ञमयी भावना से परिपूर्ण हो जायेंगे क्योंकि हम जो भी कार्य करेंगे उसका आधार ऋत् होगा और ऋत् के साथ जुड़ा हुआ कार्य कभी भी स्वार्थ की काराओं में सिमटकर नहीं रहता है, बल्कि उसमें त्याग की भावना स्वभाविकरूप से ही निहित होती है। हम तप और त्याग की प्रतिमूर्ति बन जाएंगे और फिर वैसी स्थिति में अर्थात् इस प्रकार का जीवन बना लेने के बाद हमारे लिए (वाताः मधु) चारों ओर से हवाएं भी मधुरतामय हो जाएंगी। जब हमारा स्वयं का आचार एवं व्यवहार मधुरता युक्त हो जाएगा तो हमें चारों ओर से बदले में मधुरता ही मधुरता प्राप्त होगी। हमारे लिए (सिन्धवः मधुक्षरन्ति) नदियां भी मधुर जल को बहाने वाली हो जाएंगी और (औषधिः माध्वी सन्तु) औषधियां माधुर्ययुक्त हो जाएंगी। जब हमारा जीवन वेदानुकूल एवं यज्ञमयी हो जाएगा तो चारों ओर से हमारे लिए अनुकूलताएं प्राप्त होंगी तथा संसार के समस्त पदार्थ हमारे लिए कल्याकारी हो जाएंगे।

यही नहीं बल्कि यदि हमारा जीवन ऋत् और यज्ञमयी भावना से परिपूर्ण हो जाएगा तो फिर-**मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।** (ऋ. 1-90-7) (नक्तम् मधु) हमारे लिए रात्रि माधुर्य वाली हो जाएगी, (उषसः) उषःकाल हमारे लिए माधुर्यमय हो जाएगा, (पार्थिवं रजः) यह पार्थिव लोक जो कि सब औषधियों का उत्पत्ति स्थान है वह माधुर्य वाला हो जाएगा, (द्यौः मधु अस्तु) द्युलोक माधुर्य वाला हो जाऐगा, यही नहीं बल्कि-**मधुवान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।** (ऋ.1-90-8) (वनस्पतिः मधुमान्) वनस्पतियां माधुर्य वाली हो जाएंगी, (सूर्य मधुमानः) सूर्य माधुर्य वाला हो जाएगा (गावः माध्वी) गौवें मधुर दूध देने वाली हो जाएंगी और हम पर चारों ओर से सुख-शान्ति की वर्षा हो जाएगी। इसलिए अगले मन्त्र में कहा गया है-**शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।।** (ऋ. 1-90-9) यदि हमारे कर्म उपरोक्त प्रकार के हो जाएंगे तो फिर स्वाभाविक प्रकार से ही हम में इस मन्त्र में बताए गए गुण आ जाएंगे (या शान्ति प्राप्ति के लिए हमें इन गुणों को धारण करना चाहिए)। हमारा सबके प्रति मित्र-भाव हो अर्थात् हमें किसी से भी ईर्ष्या-द्वेषादि न हो, बल्कि स्नेह-युक्त ही व्यवहार हो। हम वरुण का गुण धारण करें **'वरुणो नाम वरः श्रेष्ठः'** द्वेषभावना का त्याग करके हम श्रेष्ठ बन सकते हैं, ईर्ष्या-द्वेष व्यक्ति की मनन-शक्ति को मार देती है, किसी को गिराकर हम ऊपर नहीं उठ सकते हैं, बल्कि स्वयं पुरुषार्थ

करके वैसा बनें। अथर्ववेद में कहा गया है कि (6-18-2) दूसरे के अभ्युदय को सहन न कर पाना ईर्ष्या है। वेद में ईर्ष्या को **'हृदय-अग्नि'** (अ.6-18-1) कहा है जिससे व्यक्ति कर्त्तव्य-अकर्त्तय तथा धर्म-अर्धम को भूल जाता है, उसकी न्याय-वृत्ति नहीं रहती, वह लोक-लाज की भी परवाह नहीं करता। ऐसे व्यक्ति को वेद में मृत-मना-'मृतमनस्तर' कहा गया है अर्थात् मिट्टी में जैसे मनन-शक्ति नहीं होती वह भी ऐसा ही बन जाता है, दूसरे वह 'मम्रुष' अर्थात् वह मरे हुए के समान हो जाता है, ईर्ष्या मनन-शक्ति को मार देती है, उस व्यक्ति की आत्मा मानों मर जाती है। इसके विपरीत अथर्ववेद में कहा है कि (4-33-7) द्वेष-भाव के छूटने से पाप-वृत्ति भी छूट जाती है। हम अर्यमा बनें-**'आर्यमेति तमाहुर्यो ददाति।** तै.1-1-2-4 अर्यमा वह है जिसमें दान की भावना हो। अर्यमा के अन्य अर्थ भी हैं-जो संयमशील है,विद्वानों का सम्मान करने वाला है, (अरीन् यच्छति) शत्रुओं का दमन करने वाला है। हम इन्द्र अर्थात् परम ऐश्वर्यशाली, शक्तिमान्, असुरों का संहार करने वाले बनें। इन्द्र के अर्थ परमात्मा और आत्मा दोनों हैं। आत्मा के सम्बन्ध में वेद कहा है-**शुक्रोऽसि भ्राजाऽसि स्वरसि ज्योतिरसि। आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।।** (अथर्व.2-11-5) तू शुद्ध-पवित्र है, प्रकाशस्वरूप है, आनन्दस्वरूप है, तेजस्वरूप है, अतः-श्रेयांसम् आप्नुहि-अपने से अधिक गुणीजनों की संगति करो, समम् अतिक्राम-उन जैसे बनो, उनके बराबर हो जाओ, पुनः उनसे भी आगे बढ़ जाओ; जीवन में कभी भी हताशा-निराशा के भाव न आने दो। हम बृहस्पति बनें। ऊंचे से ऊंचा ज्ञान प्राप्त करने वाला बृहस्पति है। हम सदा ही ज्ञानवान् बनें। ऐसा तभी होगा यदि हम किसी आचार्य के पास जाकर शिक्षा ग्रहण करेंगे। ऋग्वेद में कहा गया है कि (ऋ. 1-40 सूक्त) आचार्य हमें वेद-ज्ञान इस प्रकार से देता है जिससे हमारे जीवन में इन्द्र, वरुण, मित्र तथा अर्यमा आदि का उचित स्थान बन जाता है। आचार्य हमें अज्ञानान्धकार से दूर करके ज्ञान-धन से परिपूर्ण करता है, शक्तिशाली बनाता है, उत्तम अश्वरूपी इन्द्रियों का हांकने वाला बनाता है, वाणी की सत्यता प्रदान करता है, यज्ञमयी जीवन बनाता है, ब्रह्म व क्षत्रबल दोनों से परिपूर्ण करता है। हम विष्णु बनें। विष् व्याप्तौ-विष्णु शब्द व्यापक मनोवृत्ति का संकेत कर रहा हैं। हमारे हृदय में विशालता होनी चाहिए संकुचितता नहीं। हृदय की यह व्यापकता ही हमें प्राणिमात्र का स्नेही बनाएगी तथा प्राणिमात्र से हमें सुख और शान्ति प्राप्त होगी। हम उरुक्रम बनें। परमात्मा महान् क्रम (व्यवस्था) करने वाला है। हमारा जीवन भी सब प्रकार से सुव्यवस्थित हो। अव्यवस्था चाहे किसी प्रकार की भी हो वह व्यक्ति, समाज, संस्था तथा देश और विश्व के दुःख व कष्ट का कारण बनती है। इसके विपरीत जहां नियमानुसार सब कुछ सुव्यवस्थित हो वहां पर सुख और शान्ति होती है, प्रेम और सौहार्द होता है, त्याग और समरसता होती है।

संपर्क-महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०) 175018 मो० 09418053092

प्रेरक वचन

- **धैर्य के साथ किसी भी संकट का मुकाबला किया जा सकता है।**
- **सत्य शर्मसार होने से बचाता है।**
- **क्षमादान भी शक्तिशाली पर ही शोभा देता है।**
- **सिर्फ अपूर्णता ही अपूर्ण चीजों की शिकायत करती है।**
- **अपने लक्ष्य की राह में किसी की परवाह नहीं करनी चाहिए।**
- **सत्य सदैव सबसे प्रबल तर्क होता है।**
- **विनम्रता के साथ सफलता कई गुणा बढ़ जाती है।**
- **उत्साह और जोखिम भाव उद्यमिता के अनिवार्य तत्त्व हैं।**
- **परम्परा के साथ नवीनता का मेल ही श्रेष्ठता की रचना करता है।**
- **सकारात्मक आलोचना की अनदेखी निरंकुशता की ओर ले जाती है।**
- **कुछ भी सम्पूर्ण नहीं होता है इसलिए सुधार की गुंजाइश हमेशा रहती है।**
- **समृद्धि का आकलन सिर्फ भौतिक संसाधनों से नहीं किया जा सकता।**
- **सही काम के लिए समय हमेशा सही होता है।**
- **दृढ़ इच्छाशक्ति से कोई भी बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।**

संकलनकर्त्ता–भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० *9416972879*

पाँच कारणों का प्रभाव विशेष होता है मनुष्य के ऊपर

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

मनुष्य का जीवन अच्छा बने या बुरा बने इसके लिए उसके जीवन पर पांच कारणों का प्रभाव विशेष दिखाई देता है। उन्हीं के अनुसार मनुष्य का जीवन अच्छा या बुरा बनता है। वे पांच कारण इसी भांति हैं-

1. पूर्व जन्म में किए कर्मों के अनुसार- मनुष्य अपने पूर्वजन्म में यानि इस जन्म से पहले वाले जन्म में

उसने अच्छे या बुरे जैसे भी कर्म किये थे उसी के अनुसार ईश्वर उस जीव को अगली योनि, जाति, आयु, भोग के रूप में देता है। जाति का तात्पर्य यह होता है कि उस जीव को अगली योनि मनुष्य, पशु-पक्षी या कीट-पतंग आदि की योनि उसके पिछले किये कर्मों के अनुसार देता है। इनमें मनुष्य योनि सबसे उत्तम व श्रेष्ठ है। साथ ही यह योनि अन्तिम योनि होने से मोक्ष का द्वार भी है, जो जीव का मुख्य लक्ष्य है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है। इसीलिए जीव का मनुष्य जीवन पाना उसके अच्छे किये कर्मों का फल है। जाति कभी बदली नहीं जाती यानि वह जीव उम्र भर उसी योनि में रहेगा। आयु और भोग, कम व अधिक हो सकते हैं। मान लीजिये किसी मनुष्य की आयु ईश्वर ने उसके किए कर्मों के अनुसार अस्सी वर्ष की दी है। वह मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण संयम से रहता है। योग, आसन, व्यायाम आदि करता है, भोजन पौष्टिक करता है, विचार सुन्दर रखता है, किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष की भावना नहीं रखता है, सदैव प्रसन्नचित्त रहता है, उसकी आयु अस्सी से अधिक हो जायेगी। यदि वह साधारण रूप से रहता है, तो उसकी आयु अस्सी ही रहेगी और यदि निम्न स्तर से रहता है तो उसकी आयु कम हो सकती है। भोग का तात्पर्य यह है कि वह जीवन में क्या खाएगा, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा या नहीं, उसके सुख के साधन क्या हैं, उसके जीवन में सुख-दुःख कैसे आवेंगे आदि। यह सब भोग में आता है। अच्छा जीवन बिताने से आयु की भांति भोग भी घटाया व बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार मनुष्य के ऊपर पूर्वजन्म के किये कर्मों का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।

2. माता-पिता का प्रभाव-मनुष्य के ऊपर माता-पिता का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। जिस व्यक्ति के माता-पिता संयमी, निष्कपट, निश्छल, संस्कारित व उदार प्रवृत्ति के होते हैं, जिनके जीवन में ईमानदारी हो, झूठ नहीं बोलते हों, सबसे सुन्दर व्यवहार करते हों, बच्चों को भी अच्छी शिक्षा देते हों, उनकी सन्तान अपने माता-पिता को देखकर वैसे ही बन जाती है। इसके विपरीत जिनके माता-पिता का जीवन अधार्मिक है उनके बच्चे भी बेईमान, दुराचारी, दुष्ट, लफंगे व कमजोर होते हैं। इस प्रकार माता-पिता का प्रभाव भी बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। उदाहरण के तौर पर श्रीराम के ऊपर माता कौशल्या का और शिवाजी के ऊपर माता जीजाबाई का पड़ा था।

3. परिवार के सदस्यों का प्रभाव-बच्चों पर माता-पिता के प्रभाव के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है। परिवार के चाचा-चाची, ताई-ताऊ, दादा-दादी तथा उनकी सन्तान जिनके साथ बच्चा सदैव मिलता-जुलता रहता है, उनका प्रभाव भी बहुत पड़ता है। साथ ही रिश्तेदारों व पड़ौसियों का प्रभाव भी बहुत पड़ता है। बच्चे का आठ-दस वर्ष तक का जीवन अपने घर के सदस्यों के साथ अधिक बीतता है, इसलिए घर का वातावरण अच्छा होगा तो बच्चे के चरित्र तथा स्वभाव पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा अन्यथा बच्चे के चरित्र, स्वभाव व व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

4. बच्चे के साथियों व मित्रों का प्रभाव-बच्चे के ऊपर उसके साथियों व मित्रों का प्रभाव बहुत अधिक पड़ता है। यदि बच्चा अपने अच्छे माता-पिता व अच्छे परिवार में पलकर अच्छा है परन्तु बाद में उसको साथी व मित्र गलत मिल गये। बेईमान, झूठे व चरित्रहीन मिल गये, ताश-चौपड़ खेलने वाले, सिनेमा-फिल्म देखने वाले, जूवा खेलने वाले तथा अन्य प्रकार के गलत व अश्लील काम करने वाले मित्र मिल गये तो बच्चे पर उसकी कुसंगति का बुरा प्रभाव पड़ेगा और बच्चा उन्हीं के कुमार्ग पर चलने लगेगा। इसलिए बच्चे के माता-पिता तथा उसके अभिभावकों को बच्चे का बहुत ध्यान रखना चाहिए। उसके साथ-मित्र कैसे हैं? वह कहाँ-कहाँ आता-जाता है? उससे मिलने

वाले व्यक्ति कैसे हैं? इन सब बातों का ध्यान जरूर-जरूर रखना चाहिए। यदि इसके साथी व मित्र अच्छे नहीं हैं, तो उनसे दूर रखने के लिए किसी अच्छे गुरुकुल में भेज देना चाहिए ताकि वह कुसंगति से बच सके।

5. शिक्षा का प्रभाव-बच्चा जिस स्कूल में पढ़ता है, उस स्कूल के शिक्षक यदि अच्छे नहीं हैं और यदि उसकी कक्षा के विद्यार्थी अच्छे नहीं हैं तो इन दोनों का प्रभाव बच्चे पर बहुत अधिक पड़ता है। स्कूल की पढ़ाई का भी बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि बच्चों को इतिहास में राम, कृष्ण, महात्मा चाणक्य, वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, वीर सावरकर, सुभाषचन्द्र बोस व महर्षि दयानन्द के जीवन पर कोई प्रकाश नहीं डालोगे तो बच्चों को अपने राष्ट्र व अपने इतिहास पर गौरव का आभास कैसे होगा? यदि बच्चों पर बाबर, हुमायूं, अकबर, अंग्रेजों का इतिहास और कांग्रेस का इतिहास ही पढ़ाया जायेगा तो वह बच्चा देश के सच्चे इतिहास से तो अनभिज्ञ ही रहेगा, इस स्थिति में वह देश के इतिहास पर क्या गौरव का अनुभव करेगा? इसलिए बच्चों पर पढ़ाई का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। देश की सही उन्नति व आदर्श भारत तभी बनेगा जब हमारी सरकार गुरुकुलों की तरफ विशेष ध्यान देकर उनको प्रोत्साहित करेगी और प्रत्येक भारतीय अपने बच्चे व बच्चियों को गुरुकुलों में भेजकर प्रसन्न व आनन्दित होंगे। यह प्रसन्नता की बात है कि आज कल गुरुकुलों में केवल संस्कृत में वेद तथा ऋषि-मुनियों कृत आर्षग्रन्थ ही नहीं पढ़ाये जाते बल्कि उनके साथ विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल तथा कृषि व शिल्पकल सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती है जिससे गुरुकुलों के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बन सके। मेरा स्वयं का यह विचार है कि यदि भारत को पुनः 'विश्वगुरु' के शीर्ष स्थान पर सुशोभित करना चाहते हो तो पहले की भांति सरकार को गुरुकुलों की तरफ विशेष ध्यान देना पड़ेगा और जब गुरुकुलों में पढ़े हुए विद्यार्थियों के हाथों सरकार की बागडोर आ जायेगी तभी भारत का चरित्र उभर कर विश्व के सामने आवेगा और तभी भारत चरम उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता हुआ अपने लक्ष्य विश्वगुरु के उच्च पद को प्राप्त कर सकेगा। 'खुशहाल' की आंखें भारत के उस गौरवपूर्ण समय की प्रतिक्षा में हैं। आशा है आदरणीय नरेन्द्र मोदी के शासनकाल में वह समय शीघ्र ही आवेगा।

नींबू एक गुण अनेक

1. नींबू के गुण बहुत हैं, सुनो लगाकर ध्यान।
नींबू नित सेवन करो, चाहो यदि कल्याण॥
चाहो यदि कल्याण, मान लो बात हमारी।
नींबू देगा मिटा, भयंकर सब बीमारी॥
नींबू गुण की खान, प्रेम से नींबू खाओ।
नन्दलाल सब स्वस्थ रहो, प्रभु के गुण गाओ॥
2. खतरनाक है दोस्तो, मोटापे का रोग।
इस मोटापे से दुःखी, हैं अब काफी लोग॥
हैं अब काफी लोग, साथियो मत घबराओ।
इसका करो इलाज, रोग पर काबू पाओ॥
छः-छः माशे शहद, और नींबू रस लेकर।
पाव सलिल में मिला, प्रतिदिन पीओ जीभर॥
3. अगर कब्ज से साथियो, तुम हो ज्यादा तंग।
करो दवाई एक तुम, सुखी रहेगा अंग॥
सुखी रहेगा अंग, एक नींबू लो प्यारो।
नींबू रस में नमक मिला, पानी में डारो।
एक पाव जल प्रातःकाल, रोजाना पीओ।
एक माह प्रयोग करो, फिर सुख से जीओ॥
4. दूध उलटता है अगर, बच्चा कोई मित्र।
मत घबराओ औषधि, सुन लो एक विचित्र॥
सुन लो एक विचित्र, जरा-सा नींबू रस लो।
थोड़े जल में उसे डालकर आप मिला दो॥
एक दिवस में तीन बार दो, औषधि उत्तम।
दूध उलटना बन्द, घोषणा करते हैं हम॥
5. बवासीर से आपको, होता है यदि कष्ट।
औषधि यह सेवन करो, हो जाएगा नष्ट॥
हो जाएगा नष्ट, एक नींबू का रस लो।
गोदुग्ध के साथ मिलाकर मित्र पिला दो॥
एक मास तक प्रातःकाल यह दवा पिलाओ।
बवासीर का रोग, भयंकर दूर भगाओ॥
6. अगर चाय को छोड़ना, चाहो भइया आप।
करना चाहो प्रेम से अगर ओ३म् का जाप॥
अगर ओ३म् का जाप, एक नींबू लो भाई।
गर्म सलिल में मिला, बना लो अजब दवाई॥
इस औषधि से पेट, रहेगा ठीक तुम्हारा।
मिला जाएगा तुम्हें, चाय से भी छुटकारा॥

-पं० नन्दलाल निर्भय, पलवल, जिला फरीदाबाद

अमूल्य शिक्षा

1. बहुत ही कम प्रतिज्ञायें करो।
2. हमेशा सच बोलो।
3. किसी की निन्दा मत करो, झूठ बोलना ही निन्दा होती है।
4. अच्छे पुरुषों का साथ करो।
5. जीवन को नियमित रखो।
6. जूआ मत खेलो।
7. मादक (नशीली) वस्तुओं का सेवन मत करो।
8. उत्तम संग और मधुर भाषण सद्‌गुणों के स्तम्भ हैं।
9. आमदनी से सदा कम खर्च करो।
10. जहाँ तक हो सके ऋण मत करो।
11. दो कर्म करता हुआ मनुष्य इस संसार में शोभा पाता है। कुछ भी कठोर न बोलता हुआ तथा किसी प्रकार असज्जनों का सत्कार न करता हुआ।
12. यह शरीर को सर्वदा सुखा देने वाले दो तीखे कांटे हैं–
    (1) जो निर्धन होकर ऊँचे मनोरथ करे।
    (2) जो असमर्थ होकर क्रोध करे।
13. इन दोनों को गले में पत्थर बांधकर डुबो देना चाहिए–
    (1) दान न देने वाले धनिक को।
    (2) परिश्रम न करने वाले दरिद्र को। (विदुरनीति)

जीवन-मरण के प्रश्न

	जीवन	मरण
1.	ईश्वर उपासना	प्रकृति उपासना
2.	विद्या	अविद्या
3.	परोपकार	स्वार्थ
4.	ब्रह्मचर्य	व्यभिचार
5.	मित्रता	शत्रुता
6.	सादगी	सजावट
7.	कृतज्ञता	कृतघ्नता
8.	वीरता	कायरता

2. प्रसन्नता–(1) जो प्रसन्न है उसका मन एकाग्र होता है। जिसका मन एकाग्र होता है वह समाधि की अवस्था को प्राप्त करता है। (महर्षि व्यास)

जो हर समय प्रसन्न रहता है, जिसने सब चिंताओं का त्याग कर दिया है, वह चिन्ताओं से ऊपर उठा हुआ मनुष्य ही योगी है। उसी को योग की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

(महर्षि याज्ञवल्क्य)

(3) जो आदमी प्रसन्नचित्त रहता है उसके सभी दु:ख स्वयमेव समाप्त हो जाते हैं। जो प्रसन्नचित्त है, उसकी बुद्धि बहुत शीघ्र एकाग्रता प्राप्त कर लेती है।

(4) चिन्ता का ज्वर हो जाये तो उस आदमी की भूख मिट जाती है। नींद मिट जाती है। शक्ति का अंत होजाता है।

(5) मन में यदि ईश्वर विश्वास और ईश्वर प्रेम भरा होगा तो चिन्ता आयेगी, बाहर खड़ी होकर चली जायेगी। यह अटूट विश्वास उत्पन्न करो कि ईश्वर जो कुछ करता है वह तुम्हारे भले के लिए करता है, वह तो ममताभरी माँ है। बच्चे का बुरा कभी नहीं चाहती इसलिए प्रसन्नचित्त रहो।

(1) वे ही मनुष्य, असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच आदि हैं जो आत्मा में और जानते, वाणी से और बोलते और करते कुछ और ही हैं। वे कभी अविद्यारूप दु:खसागर से पार हो आनन्द को नहीं प्राप्त हो सकते। और जो आत्मा, मन वाणी और कर्म से निष्कपट एक-सा आचरण करते हैं वे ही देव और सौभाग्यवान सब जगत को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक में अतुल सुख भोगते हैं।

(यजु० पृ० 890/3)।

(2) ब्रह्म के अनन्त होने से जहाँ-जहाँ मन जाता है, वहाँ-वहाँ प्रथम से ही स्थिर ब्रह्म वर्तमान है उसका विज्ञान शुद्ध मन से होता है। चक्षु आदि इन्द्रियों और अविद्वानों से देखने योग्य नहीं है। वह आप निश्चल हुआ सब जीवों को नियम में चलाता और धारण करता है। उसके अति सूक्ष्म इन्द्रियगम्य न होने के कारण धर्मात्मा, विद्वान्, योगी को ही उसका साक्षात् ज्ञान होता है अन्य को नहीं।

(यजु० पृ० 890/4)।

जर को ही जिन्दगी का सहारा समझ लिया,
मल्लाह ने किस्ती को, किनारा समझ लिया।
चुंधिया गई हैं आँखें, भोगों की चमक से,
भोगों को जिन्दगी का दुलारा समझ लिया।

सादगी सदाचार की जननी है और शृंगार व्यभिचार का दूत है। **भेंटकर्त्ता–सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक'**
आर्यसमाज गोहानामण्डी, जिला सोनीपत

स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द

❑ रामसुफल शास्त्री, पुरोहित एवं वैदिक प्रवक्ता

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, की उद्घोषणा करके महर्षि दयानन्द ने अपने हृदय की पीड़ा को जनमानस में भरते हुए समग्र देश में स्वाधीनता की लहर को उठाने का

काम किया और राष्ट्रीय चेतना प्रज्ज्वलित कर स्वतन्त्रता की ज्वाला को जलाया। ऐसे महान् राष्ट्रभक्त महर्षि दयानन्द का नाम दुनिया के सर्वोच्च स्थान पर स्वर्णाक्षरों में लिखा होना चाहिए। महर्षि जी नवजागरण के पुरोधा, राष्ट्रचेतना के अग्रदूत और स्वतन्त्रता संग्राम के दूरदर्शी सेनानी थे। उन्होंने अपनी प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा के द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया मोड़ दिया, सोई हुई चेतना को जगाया।

पराधीनता की पीड़ा उनके मर्म को चीरती रहती थी। गुलामी की वेदना से वे सदैव बेचैन रहते थे। देश की पीड़ा उनकी पीड़ा बन गई थी। राष्ट्र का दर्द ऋषिवर के हृदय की गहराई तक पहुँच चुका था। उनकी लेखनी से अंकित एक-एक शब्द राष्ट्रभक्ति से भरा होता था। उनके मुख से निकले एक-एक शब्द में स्वाधीनता के प्रति तड़प दिखाई देती थी। वे सत्यवादो निर्भीक संन्यासी थे। महर्षि दयानन्द ने घोषणा करते हुए कहा था कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है।

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम महर्षि ने केवल देखा ही नहीं अपितु राष्ट्रभक्त दयानन्द ने उस चिंगारी को जलाया और उस संग्राम का नेतृत्व भी किया था। परन्तु प्रयास विफल हुआ। महर्षि दयानन्द इस विफलता से बहुत ही हताश हुए। इस हताशा व निराशा के वातावरण में महर्षि दयानन्द को प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द का भाव भरा सन्तोषजनक सान्निध्य मिला। महान् गुरुवर विरजानन्द ने प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) होते हुए मांज संवारकर पूरी तरह निखार दिया। उनमें पूर्ण सामर्थ्य भर दिया। दयानन्द को कुन्दन बना दिया।

महर्षि दयानन्द पूर्ण साहस-निर्भयता और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्यक्षेत्र में निकल पड़े। महर्षि के अंग-अंग में राष्ट्रीयता जगमगा रही थी। उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अन्तिम उद्देश्य स्वाधीनता ही था। वे हमेशा अखण्ड चक्रवर्ती राज्य का चिन्तन किया करते थे।

स्वामी दयानन्द की निडरता का एक बड़ा अच्छा प्रेरणादायी प्रमाण है। 1873 में अंग्रेजों के शासनकाल में पराधीनता के दौरान इस देश के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थ ब्रुक से महर्षि ने निर्भयतापूर्वक कहा था कि मैं तो प्रतिदिन प्रातः-सायं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे परमपिता परमात्मा इस देश को विदेशियों की गुलामी से शीघ्र मुक्त कीजिए। महर्षि दयानन्द कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे एक युगद्रष्टा महान् ऋषि थे। स्वामी जी स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत ही नहीं अपितु राष्ट्रीय क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति, राजनीतिक क्रान्ति एवं धार्मिक क्रान्ति के समग्रदूत भी थे। महर्षि का तेज सबको आगे बढ़ने में गति प्रदान कर रहा था। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण की नींव दृढ़ता से निर्मित की थी। महर्षि चहुँमुखी जागरण के प्रवर्तक थे। लोकसभा के अध्यक्ष रह चुके श्री अनन्त शयनम अयंगर ने कहा था कि यदि महात्मा गांधी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह (दादा) थे।

संपर्क-आर्यसमाज सैक्टर-7बी, चंडीगढ़, मो० *9416034759* *9466472375*

दयानन्द सन्देश

**सोई हुई जनता जगाई दयानन्द ने।
वेदों की शिक्षा बताई दयानन्द ने॥
पाखण्ड था छाया हुआ शिक्षा न दी जाती थी।
नारी तो बस शूद्र और नीच ही कहाती थी।
स्त्री शिक्षा आरम्भ करवाई दयानन्द ने॥ 1॥
जाति-पाति भेदभाव द्वेष नीच-ऊँच का।
अन्तर भी काफी था मानवों के बीच का।
सभी की एक जाति बताई दयानन्द ने॥ 2॥
वेदों को तो कहते थे शंखासुर ले गया।
बदले में पुराणों के गपोड़ों को दे गया।
वेद की ज्योति जलाई दयानन्द ने॥ 3॥
लोग दासता की जंजीरों में जकड़े थे।
पंडे पुजारी बस पेट यहाँ भरते थे।
स्वराज की हुंकार लगाई दयानन्द ने॥ 4॥
सच्चे शिव के भक्तो दयानन्द की मान लो।
वेद है वाणी सच्चिदानन्द की जान लो।
'सुफल' सच्ची भक्ति सिखाई दयानन्द ने॥ 5॥**

रामपालदास गया सतलोक

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

भोले लोगों को काल्पनिक 'सतलोक' का झांसा देकर, ठगने वाला रामपालदास स्वयं वास्तविक के 'सतलोक' में चला गया है। 'जेलखाना' ही ऐसे लोगों के रहने का न्यायोचित

स्थान है और यही इनका 'सतलोक' है। 'सत्यार्थप्रकाश' के आधे-अधूरे प्रसंग लेकर उन पर मनमानी टिप्पणी कर आंख के अन्धे लोगों को बहकाने वाले रामपालदास और उसके चेले-चेलियों को अब तो आभास होना ही चाहिए कि 'सत्यार्थप्रकाश' की जीत हुई। रामपालदास के पतन को इस ग्रन्थ की शिक्षाएँ स्वयं प्रकाशित कर रही हैं। भूमिका में ही महर्षि दयानन्द लिखते हैं, "**सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।**"

रामपालदास जो सतलोक में भेजने की बात करता था, ऐसी मुक्ति का खण्डन तो पहले ही 'सत्यार्थप्रकाश' में है। नवम समुल्लास में वर्णन मिलता है, "ये मुक्तियाँ नहीं हैं, किन्तु एक प्रकार का बन्धन हैं, क्योंकि ये लोग शिवपुर, मोक्षशिला, चौथे आसमान, सातवें आसमान, श्रीपुर, कैलाश, वैकुण्ठ, गोलोक को एक देश में स्थानविशेष मानते हैं।" रामपालदास इस्लाम मत से शास्त्रार्थ का दावा करता था। लेकिन मुक्ति के सम्बन्ध में स्वयं ही उनकी पंक्ति में खड़ा है। यह पाप क्षमा करवाने की बात करता था। ऐसे लोगों को स्वामी जी 'पोप' कहते थे। 'सत्यार्थप्रकाश' के एकादश समुल्लास में इस विषय में लिखा है, "अब देखिये जानो स्वर्ग का ठेका पोपजी ने ही ले लिया हो।" रामपालदास जैसे अनेक ढोंगियों के सम्बन्ध में लिखा है, "वैसे ही आर्यावर्त देश में भी जानो पोप जी ने लाखों अवतार लेकर लीला फैलाई हो।" लेकिन रामपालदास तो पोपों का भी पोप 'महापोप' है और उतना ही निकृष्ट है। इस पोप ने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व पर भी आक्षेप किए। ऐसे ऋषि पर इस प्रकार के आक्षेपों के पाप का इसे फल मिला। "पाप का फल अवश्य मिलता है," ऋषि के इस वेदानुकूल सिद्धान्त का प्रत्यक्षीकरण हुआ। स्वयं को 'परमात्मा' घोषित करवाकर रामपालदास 'परमात्मा' की सत्ता को चुनौती दे रहा था, परमात्मा की न्यायव्यवस्था अनुसार उसे भयंकर दण्ड मिला। उसकी बुद्धि भ्रष्ट होती गई और यहाँ तक पहुँच गया। इस सम्बन्ध में रामपालदास व उसके चेले-चेलियों को 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के 'रुद्र', 'यम', 'न्यायकारी' नामों के अर्थ पढ़ने चाहिएं। रामपालदास जैसे ढोंगी गुरुओं के एजेंट मनुष्य समाज में घूमकर कैसे इनके चमत्कारों की मिथ्या कहानियाँ सुनाकर लोगों को इनके जाल में फँसा देते हैं, इसका वर्णन भी 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में है। ऐसे ढोंगियों का एक ही सिद्धान्त होता है, "**रोटी खाइये शक्कर से और दुनिया ठगिये मक्कर से।**" यह भी पंक्ति इसी समुल्लास की है।

सत्य सनातन ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' पर आधारित यह 'सत्यार्थप्रकाश' है, अतः इसकी सदैव जीत होगी। 'करौंथा सत्याग्रह' के सभी बलिदानियों को श्रद्धांजलि और इसमें भाग लेने वाले धर्मवीरों को बार-बार धन्यवाद।

रामपालदास व उसके चेले-चेलियों को ऋषि दयानन्द का धन्यवाद करना चाहिए। ऐसे लोगों के जेल जाने की जो न्यायव्यवस्था है, उसे भी ऋषि जी ईश्वर की दया मान रहे हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' के सातवें समुल्लास में लिखते हैं, "दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना डाकू पर और उस डाकू को मार देने से अन्य सहस्त्रों मनुष्यों पर दया प्रकाशित होती है।" अतः अब भी रामपालदास व उसके एजेंट ईश्वर की सत्ता, ईश्वरीय ज्ञान 'वेद', ईश्वरीय न्यायव्यवस्था को सही रूप में जानने के लिए 'सत्यार्थप्रकाश' अपनाएँ। सामाजिक संगठनों से जुड़े उन तथाकथित नेताओं और राजनेताओं को शर्म आनी चाहिए जो रामपालदास का साथ ले रहे थे या उसका साथ दे रहे थे। ऐसा करके ये लोग मनुष्य का नहीं, अपितु असुर का कार्य कर रहे थे। यहाँ भी 'सत्यार्थप्रकाश' ऐसे लोगों का मार्गदर्शन करता है। वहाँ मनुष्य उन्हें माना है जो धर्मात्माओं की रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा करते रहते हैं, फिर चाहे धर्मात्मा महा अनाथ और निर्बल ही क्यों न हो और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् भी हो तो उसका नाश, अवनति सदा करनी चाहिए। आसुरी कार्यों से समाज में अराजकता ही फैलती है। अतः जन व धन बल के लिए रामपालदास के सहयोगी बनने वाले कभी भी समाज के हितैषी नहीं हो सकते। ऋषि दयानन्द ने बड़े से बड़े प्रलोभन मिलने पर भी कभी झूठ का सहारा नहीं लिया।

तनाव का उपचार

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

जैसे जब कभी किसी कारण से किसी भी नस-नाड़ी में खिंचाव, कसाव आ जाता है, तो उससे सारे शरीर और व्यवहार में बेचैनी होती है। ऐसे ही जब किसी भी समस्या, किसी प्रकार के अभाव या चिन्ता से मन में बेचैनी आ जाती है, तो उससे तनाव उभर आता है। मन की बेचैनी, तनाव तभी दूर होता है जब मन निर्मल, एकाग्र, शान्त होता है। अन्यथा नहीं, इसीलिए गीता में कहा है-

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥ (2.65)

एकाग्रता रहित, बेचैन को (वस्तुस्थिति का) बोध नहीं होता और न ही उसको किसी क्षेत्र में सफलता, टिकाव मिलता है। टिकाव के बिना शान्ति कैसे आ सकती है, तब अशान्त को सुख कहाँ?

इस बात को स्पष्ट करने का दूसरा दृष्टान्त है-निद्रा का। जैसे जिस किसी रात किसी कारण से नींद नहीं आती, तो शरीर में बेचैनी हो जाती है। इसका एकमात्र उपचार तब निद्रा ही होता है। जो कि मन के निर्मल, एकाग्र, शान्त होने से ही आती है। तभी तो वेद ने निद्रा से पूर्व छः बार '**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**।' (यजु० 34.1-6) की प्रार्थना के माध्यम से प्रेरणा दी है। अतः हमारा प्रतिदिन का अनुभव है कि जब तक मन अस्त-व्यस्त, अशान्त, बेचैन रहता है। तब तक निद्रा नहीं आती। गहरी नंद के आ जाने पर व्यक्ति तनावों, दुश्चिन्तनों से मुक्त हो जाता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने- '**उतिष्ठेयुर्गतक्लमः**' (7.225) शब्दों का प्रयोग किया गया है। अर्थात् गहरी निद्रा से जागकर व्यक्ति थकावट, परेशानियों से छूटकर तरोताजा हो जाता है। तभी तो यह कहावत है- '**दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करो**' और यह बात शिशओं में प्रत्यक्ष है। वेद ने गहरी नींद के लिए '**सुनन्दिषीमहि**' यजु० 4.14 शब्दों का प्रयोग करके दर्शाया है कि गहरी निद्रा से हर्षित, प्रसन्न जैसा प्रभाव होता है।

ऐसे ही व्यावहारिक जीवन में तनावों से मुक्ति, मन के निर्मल, शान्त, एकाग्र होने से आती है। मानसिक शान्ति के लिए सर्वप्रथम अपने मन, विचारों को सम्भालना होगा। जैसे चुटकुलों, हँसी की बातों के समय मन हलका, तनाव रहित होता है। ऐसे ही बेचैनी के समय हम मन को प्रसन्न, चिन्तारहित, प्रोत्साहित करने वाले ही विचार पढ़ें, सोचें।

हमारा मन विचारों का साधन, विचारों का समूह, पुञ्ज है। अतः जिसके जैसे आशा, उत्साह भरे या उदासी, निराशा वाले विचार होते हैं, उसका जीवन व्यवहार, भी वैसा ही परिणाम प्रतिफल दर्शाता है। मन की शान्ति, निर्मलता, एकाग्रता का सबसे अच्छा उपाय-अपने ऊपर भरोसा, आत्मविश्वास है, जिससे व्यक्ति में आत्मबल आता है। इस आत्मबल की प्राप्ति के लिए **आत्मना विन्दते वीर्यम्** वचन विशेष स्वारस्य पूर्ण हैं अर्थात् अपने आप को समझने से, आत्मविश्वास से आत्मबल उभरता है। जिसकी पूर्ण प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए मनुस्मृतिकार ने कहा है-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥ (5.109)

जैसे कि आकारवाली भौतिक चीजें जल से निखर जाती हैं। ठीक ऐसे ही विद्या और तप द्वारा प्राणियों का आत्मा निखर जाता है। निःसन्देह विद्या शब्द पढ़ाई-लिखाई के अर्थ में प्रसिद्ध है। पर इसकी चर्चा '**बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति**' में आगे आ रही है। वैसे ही यहाँ आत्मा का प्रकरण है। अतः आत्मा से सम्बद्ध होने से विद्या यहाँ आत्मज्ञान का बोधक है। इसके साथ दूसरा शब्द तप है, जो कि भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी जैसे द्वन्द्वों के सहने के अर्थ में प्रख्यात है, पर यहाँ प्रकरण आत्मा का है। अतः यहाँ तप शब्द योगाभ्यास के अर्थ में लेना चाहिए। विद्या-तप के इस संयोग से यहाँ विद्या शब्द विचारात्मक थ्यूरी रूपी आत्मज्ञान का स्वारस्य स्पष्ट करता है, तो तप क्रियात्मक प्रक्टीकल रूपी योगाभ्यास का बोधक है। **स्वाध्यायाद् योगमासीत् योगाद् स्वाध्याय-माम्नेत** अर्थात् आत्मनिरीक्षण, अपने आपकी समझ से योगाभ्यास को पुष्ट करे। योग के अभ्यास से आत्मविश्वास को साधे। इस प्रकार इन दोनों की साथ-साथ साधना करने से **विद्यया अमृतमश्नुते- आत्मना विन्दते वीर्यम्** चरितार्थ होता है, अर्थात् साधनायुक्त आत्मज्ञान से अमरता, नित्यता, एकरसता, आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार आत्मनिरीक्षण, आत्मविश्वास से व्यक्ति में आत्मबल आता है। तब वह विपरीत परिस्थितियों में बेचैन नहीं होता और स्वतः तनावों, परेशानियों से मुक्त हो जाता है। ऐसी आत्मशक्ति देने से ही आत्मविद्या को अन्य विद्याओं से उत्कृष्ट कहा है।

इस बात की पुष्टि इसी श्लोक के '**मनः सत्येन शुध्यति**' से भी होती है। हम अपने व्यवहार में अनुभव करते हैं कि

जब किसी के मन में झूठ आदि का भार होता है, तो वह डरता रहता है, तनाव में होता है कि कहीं मेरा झूठ न पकड़ा जाए, मेरा राज न खुल जाए, मेरी चोरी सामने न आ जाए। अत: मन के मैल के निकलने से ही मन तनाव शून्य होता है।

इस सारे का सारांश यह है कि हमें विद्या=आत्मज्ञान अर्थात् आत्मविषयक आत्मा, अमृत जैसे शब्दों और आत्मवर्णनों के स्वारस्य को पहले समझना चाहिए। इसके साथ '**अहमिन्द्रो न पराजिग्ये**' अर्थात् मैं इन्द्र-शरीर, इन्द्रियों, अन्त:करण, प्राणों का राजा हूँ। मैं विविध प्रकार के ऐश्वर्यों का स्वामी हूँ। फिर मैं किसी भी विपरीत परिस्थिति से घबराऊँ क्यों, पराजित कैसे हो सकता हूँ?

उद्धरेदात्मनात्मानम्–गीता 6,5

नात्मानमवमन्येत्–मनु० 4,137

जैसे आत्मविश्वास उभारने वाले वचनों, भावों से सदा अपने मन, अपने आपे को भरने का यत्न करना चाहिए। इन सबका विश्लेषण '**आत्मदर्शन**' में विस्तार से तथा उपन्यास के रूप में किया गया है।

संपर्क-*B-2, 92/7B*, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर

छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार का भव्य आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान 60बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-110029 एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 4 नवम्बर 2018 समय प्रात: 8 बजे से एक बजे तक एवं स्थान-दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशवपुरम्, दिल्ली-110035 निकट केशवपुरम् मैट्रो स्टेशन के पास छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार का भव्य आयोजन किया जा रहा है। आप सादर आमन्त्रित हैं।

–रामपाल शास्त्री, कार्यकर्त्ता प्रधान

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

–रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

दीप चाहिए ऐसे...

दीप चाहिये ऐसे, जो मावस को करदे पूनम।
दीप चाहिए ऐसे, जिनकी बाती सदा रहे नम॥
जितनी हो सामर्थ्य बहायें हम प्रकाश की धारा।
तम हरने में लग जाये, जीव सम्पूर्ण हमारा॥
खिलें ऊषा बन, अन्धकार के घर मनवा दें मातम।
दीप चाहिये ऐसे, जो मावस को करदे पूनम॥
हो प्रकाश ऐसा जो अन्दर भी उज्ज्वलता भर दे।
बचे न तमस किसी कोने में अन्तर भासित कर दे।
दीप चाहिए ऐसे कि बने सूरज के परचम।
दीप चाहिये ऐसे, जो मावस को करदे पूनम॥
इन दीपों का स्नेह सूत्र हो शाश्वत और अनश्वर।
बुझे न ज्योति कभी चाहिए आये तूफान भयंकर।
हर घर-घर आँगन हर देहरी हो प्रकाश का आलम।
दीप चाहिये ऐसे, जो मावस को करदे पूनम॥
कुछ मनुष्य भी जलें दीप की भांति ज्ञान फैलाएँ।
तो इस जग से लोग, अंधेरा अज्ञान मिटाएँ।
इस प्रकाश का हाहाकार, स्वत: हो जाएगा कम।
दीप चाहिये ऐसे, जो मावस को करदे पूनम॥

संकलन–जगदीश आर्य, डी.पी.ई., आर्य बाल भारती विद्यालय, पानीपत मो० *9416295411*

अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन

वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित साधना स्थली, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर रोहतक-124001 में अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन रविवार 11 नवम्बर 2018 से शुक्रवार 23 नवम्बर 2018 तक किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आप सब सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

–वेदप्रकाश आर्य, मंत्री मो० 9416211809

आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक का निर्वाचन

प्रधान-श्री सूरजभान, उपप्रधान-श्री राजवीरसिंह, श्री सुनील, मंत्री-राजेन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री अनिल, प्रचारमंत्री-श्री विवेक (विक्की), पुस्तकालय अध्यक्ष-श्री विद्यानन्द, आर्यवीर दल संयोजक-श्री राजवीर, आर्यवीर दल सहायक संयोजक-श्री संजयसिंह, श्री दीपक।

–राजेन्द्रसिंह, मंत्री आर्यसमाज मोखरा (रोहतक)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रेवाड़ी। नई अनामण्डी स्थित आर्यसमाज मंदिर का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। पहले दिन महात्मा यशदेव और सुखदेव आर्य के ब्रह्मत्व में हवन हुआ जिसमें चार यजमान दम्पती व गुरुकुल घासेड़ा के ब्रह्मचारी ने हिस्सा लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोतहक के प्रधान रामपाल आर्य ने 25 से 28 अक्तूबर तक दिल्ली में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पहुँचने का निमंत्रण दिया। सविता आर्या और नरदेव ने भजनोपदेश एवं आचार्य सुश्रुत के शिक्षाप्रद व्याख्यान ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। विधायक रणधीर सिंह कापड़ीवास ने आर्यसमाज नई सब्जी मण्डी और जलियावास को 51-51 हजार रुपये देने की घोषणा की। नई सब्जी मण्डी आर्यसमाज कमेटी प्रधान देशराज आर्य ने इस प्रकार के आयोजन को निरन्तरता देते रहने का आश्वासन दिया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

—देशराज आर्य, रेवाड़ी

यज्ञ कार्यक्रम

दिनांक 7.10.2018 को प्रातःकाल आर्यसमाज भीलवाड़ जिला महेन्द्रगढ़ के कार्यालय में सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक की अध्यक्षता में यज्ञ का कार्यक्रम हुआ जिसमें सत्यपाल मधुर ने यज्ञ के बारे में बहुत मार्मिक शब्दों में यज्ञ की महत्ता को विस्तार पूर्वक समझाया तथा एक घंटे का समय देकर भजनों का कार्यक्रम भी दिया जो 8 से 10 बजे तक चला। इस कार्यक्रम में महिलाओं, पुरुषों एवं जवानों सहित सभी ने धर्मलाभ उठाया और उन्हीं की अध्यक्षता में चुनाव का कार्यक्रम भी हुआ जो निम्न प्रकार है

प्रधान-बहादुरसिंह आर्य, मन्त्री-लालचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष-सुभाषचन्द्र आर्य, प्रचारमंत्री-रघबीरसिंह आर्य।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे अपनी आर्यसमाज का गत वर्ष 2016-2017, 2017-2018 का वेदप्रचार, दशांश एवं 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका का शुल्क बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम से भेजें। हरयाणा सोसायटी एक्ट 2012 के अनुसार नकद राशि स्वीकार नहीं की जाएगी। —सभामन्त्री

दीवाली रंग लायेगी

हृदय की दूरियों को ये मिटा करके ही जायेगी।
दीवाली रंग लायेगी दीवाली रंग जायेगी॥
उदय हो ज्ञान का सूरज उजाला जग में फैलेगा।
अविद्या नाश तब होगा अंधेरी दूर जायेगी॥
जो जलते हैं परस्पर देख सुख-समृद्धि को हरदम।
ये उनके मन में अविरल प्यार की गंगा बहायेगी॥
न होगा कोई भी लम्पट लुटेरा चोर कर्मचारी।
जगत् गुरु देश भारत को ये फिर से चमचमायेगी॥
वैभव सम्पदाओं के ये बादल खूब बरसेंगे।
सभी निश्चिन्त होवेंगे खुशी घर-घर में आयेगी॥
अटल विश्वास जागेगा प्रभु से है 'वन्दना' मेरी।
किंकर्त्तव्यविमूढों को ये कुछ करके दिखायेगी॥

—कु० वन्दना शास्त्री, बी.एड. आर्य कन्या
हाईस्कूल हांसी, मो० 9466850651

समलैंगिकता रोग भयंकर...

नर-नारी का संयोग ही उत्तम, जिससे सृष्टि चलती है।
समलैंगिकता रोग भयंकर, नादानी है गलती है॥
रोगी का उपचार करो, रोग को ना स्वीकार करो।
प्रकृति के अनुकूल चलो, मानव-सा व्यवहार करो।
न कोई प्रमाण शास्त्र का, न ये अपनी संस्कृति है।
समलैंगिकता रोग भयंकर..................................॥
समलिंगी जब बूढ़े होंगे, इनसे प्रेम करेगा कौन?
जब अपनी संतान न होगी, मन के कष्ट हरेगा कौन?
मर्यादा की डोर कटे तो, जीवन-पतंग भी गिरती है।
समलैंगिकता रोग भयंकर..................................॥
आज़ादी के नाम पे भाई, ना समाज बरबाद करो।
दूरगामी परिणाम विचारो, नाश की ना शुरुआत करो।
धर्म जिसे पशुता कहता है, तुम कहते हो प्रगति है।
समलैंगिकता रोग भयंकर..................................॥

—अंकुर 'आनंद' 1591/21 आदर्शनगर, रोहतक 9416203627

द्वितीय सामवेद पारायण यज्ञ : सूचना

ग्राम धनौंदा तहसील कनीना जिला महेन्द्रगढ़ के वेदमंदिर में दिनांक 24,25,26 नवम्बर 2018 को द्वितीय सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाएगा जिसमें यज्ञब्रह्मा वेदप्रकाश श्रोत्रीय दिल्ली तथा भजनोपदेशक श्री नरेशदत्त बिजनौर होंगे।

—संतलाल आर्य, शाखा प्रधान, 9996437883

वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

वेद - वाणी

यन्ति प्रमादमतन्द्रा।

कर्मठ व्यक्ति विशेष आनन्द प्राप्त करते हैं।

वेनः क्रतुभिरानजे।

विद्वान व्यक्ति कर्म से चमकता है।

स्वर्गान् अवन्तो जयत।

कर्मठ व्यक्ति ही स्वर्ग को जीतते हैं।

अतो मंति जनयत स्वधाभिः।

अपने पुरुषार्थ से सुमति उत्पन्न करो।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा